ठोकर

लगी ठोकरें जीवन में,
चलना हमें सिखाती है।
गिरकर जो फिर उठते,
मंजिल उन्हें बुलाती है।।

संकट भरी इन राहों पर,
उम्मीदें यही जगाती है।
ले सीख जो चलते रहते,
नसीब उनका बनाती है।।

चलने वाले हर राही पर,
कहर यही तो बरपाती है।
जीवन के हर मोड़ पर,
सबक नया दे जाती है।।

कोशिश करने वालों की,
नौका पार हो जाती है।
लगी ठोकरें जीवन में,
चलना हमें सिखाती है।।

शिवलाल दाँगी
अध्यापक मो.
8435408794

चाहता हूं

मैं चाहता हूं
अपनी ज़मीन पर
खड़ा रहूं

मैं चाहता हूं
अपने सपनों को
अपनी धरती पर
रोपता रहूं

मैं चाहता हूं
जीवन -भर
अपने प्राणों की
रस गगरी से
सबकी प्यास
बुझाता रहूं ?

मैं चाहता हूं
घर घर
स्नेह की नदी
बहाता रहूं

मैं चाहता हूं
सबके सूनेपन में
बांसुरी बजाता रहूं

-दुर्गाप्रसाद झाला

माँ

माँ का आगमन-
मनहर घनाक्षरी छंद
गज की सवारी किए,
हाथों में त्रिशूल लिए,
नव रूप धर कर,
माता रानी आ गई।
कहे सब सर्व ज्ञानी,
दूजा नाम है भवानी,
रोके सारी परेशानी,
मन मैया भा गई।
शारदीय ये त्योहार,
लोग करें जयकार,
खूब सजे दरबार,
दिल मैया छा गई।
नाचें गाएँ भक्त सारे,
मैया करें न्यारे वारे,
%हिम्मत% बढ़ाने आज,
माँ सुहानी आ गई।

हिम्मत चौरड़िया प्रज्ञा
कोलकाता,लाडनूँ

आपके बनाए संविधान से

रोशनी मिली मेरे घर को,
आपके बनाए संविधान से।
बुझा था दिया कई पीढ़ियों का,
जला है वो आज आपके सम्मान से।
सदियों से अंधेरों में थे हम,
पैरों तले कुचले थे हम।
कोई पूछता न था हाल हमारा,
अब जाकर उजाला हुआ है,
आपके बनाए संविधान से।
हमारे सर को रुतबा मिला है अब,
हमारे लफ़्ज़ों को जुबां मिली है।
जो सर झुका रहता था शर्म से,
अब वो सिर उठा के चलता हूँ मैं।
कल तक जिसे पानी तक नसीब न था,
आज हर जगह मेरा बराबर हक है।
कल तक जो स्कूल से निकाले जाते थे,
आज उसी कुर्सी पर मेरा भी हक है।
यह गौरव भी मिला है मुझे,
बाबा साहेब, आपके बनाए संविधान से।
मैं सिर्फ मैं नहीं रहा अब,
मैं इस देश का
अभिमान हूँ,
आपके ही बनाए
संविधान से।

राज कुमार राज़

पितृपक्ष की अंतिम बेला

आज पितृपक्ष की अंतिम बेला है,
मन में श्रद्धा आंखो में नमी का मेंला है,
जिनके आशीष से जीवन में उजियारा था,
जिनके होने से घर आंगन में बसेरा था।

आज उन्हीं पूर्वजों को नमन करने का दिन है,
उनके चरणों में श्रद्धा के सुमन धरने का दिन है,
जिनकी उंगली पकर कर चलना सीखा था,
जिनकी छाया में हर दुःख को छोटा देखा था।

आज तर्पन के जल में भावनाएं बहती है,
हर अंजली में पुरखों की यादें रहती है,
पितर भले हीं आंखो से ओझल हो जाते हैं,
पर उनके संस्कार पीढीयों तक जीते जाते हैं।

किसी के बाबा की लाठी आज भी याद आती है,
किसी की मां की ममता आंखो को भिगो जाती है,
किसी को पिता की डांट में छिपा प्यार याद आता है,
किसी को दादी की कहानी का संसार याद आता है।

जिन्होंने अपने सपनों को हमपर वार दिया,
अपनी खुशियां छोड़ हमें जीवन का आधार दिया,
जिनकी मिहनत से घर की दीवारें खड़ी हुई,
जिनकी तपस्या से हमारी राहें बड़ी हुई।

आज उनके नाम का दीप जलाकर देखना,
मन के मंदिर में उनका चित्र सजाकर देखना,
श्रद्धा से जब भी उनका स्मरण करोगे,
अपने भीतर उनके संस्कारों का दर्शन करोगे।

पितृपक्ष आज विदा ले रहा है,
लेकिन एक संदेश हृदय में दे रहा है,
केवल श्राद्ध में हीं पूर्वजों को याद न करना,
जीते जागते माता पिता को कभी उदास न करना।

आज जो मां बाप तुम्हारे पास है,
उनके आशीष हीं जीवन की सबसे बड़ी आस है,
उनके चरणों में बैठकर दो पल बिताना ,
उनकी आंखों में छिपे सपनों को समझ पाना।

क्योंकि जब ये हाथ सिर पर नहीं रहेंगे,
तब आशीर्वाद के शब्द बहुत याद आएंगे,
तब तस्वीरों से बातें करनी पड़ेंगी,
तब यादों के सहारे रातें कटेंगी।

पितरों का सच्चा सम्मान यही कहलायेगा,
जब उनके बताए मार्ग पर परिवार चल पाएगा,
सत्य सेवा प्रेम और संस्कार अपनाएं,
अपने पूर्वजों का नाम सदा रौशन कर जाएं।

हे पितृदेव हमारी श्रद्धा स्वीकार करना,
अपनी कृपा से हमारे परिवार की रक्षा करना,
घर में सुख शांति और समृद्धि बनाए रखना,
हर संतान को सद्बुद्धि का मार्ग दिखाते रहना।
हमसे कोई भूल हुई हो तो क्षमा करना,
अपना आशीर्वाद सदा हमपर बनाए रखना,
जब तक इस तन में सांसों का आवागमन रहेगा,
आपका नाम हमारे हृदय में अमर रहेगा।

विनोद कुमार पाठक, रैनी, मुजफ्फरपुर, बिहार

प्रथम शैलपुत्री मैया

प्रथम शैलपुत्री मैया
मेरा नमन स्वीकार करें ।
मैं अज्ञानी बालक मैया
नैया मेरी पार करें ।

देवी मां की महिमा है
मां शैलपुत्री दुर्गा काली है
प्रथम रूप है मैया का
देवी मां शेरों वाली हैं ।

देवी मां शैलपुत्री हैं
मां जगदम्बा काली हैं ।
सब भक्तों की रक्षा करती
मां की महिमा निराली है।

नौ दिन तक दरबार लगा है
पूजा भजन का द्वार सजा है ।
प्रथम शैलपुत्री मैया देवी है
कैसा सुन्दर दरबार सजा है ।

करें कामना मिल मैया की
मां सुनती सबकी पुकार हैं।
करें भक्त आराधना मां की
अदभुत मैया का दरबार है ।

मां अम्बे हैं दुर्गा काली है
मां की महिमा निराली है।
दुष्टों का संहार करती है
जय मां है दुर्गा काली हैं ।

डा अनन्तराम चौबे
अनन्त जबलपुर

यमराज मित्र के दोहे

हित अपना ही देखकर, मत बन तू मक्कार।
वरना निश्चित एक दिन, होगा बँटाधार।।

भले लोग मक्कार हैं, जान रहे हैं आप।
फिर क्यों सूझे आपको, जो करते हो पाप।।

देखा हमने मक्कार को, भरे आँख में कीच।
लोग देखकर दूर से, कहते तू है नीच।।

सुलभ यहाँ सबको मिले, पानी हवा प्रकाश।
मानवता होती कठिन, करो उसी की आस।।

दुर्लभ है सत्संग यह, और संग में देह।
नहीं सँवारे जो इसे, बना रहे वो गेह।।

अनगढ़ दोहा हम लिखें, यही हमारी धार।
बिन कुर्सी के चल रही, है अपनी सरकार।।

हम यमराज के मित्र हैं, क्या ये है अपराध।
उससे मिलता है हमें, श्रद्धा भाव अगाध।।

सुनने में अच्छा नहीं, खरी-खरी जो बात।
लोगों को तो लग रहा, उनसे होता घात।।

भले नहीं स्वीकारते, कड़ुवी सच्ची बात।
मगर कटेगी भी नहीं, आने वाली रात।।

दिन की तो हम क्या कहें, नहीं बीतती रात।
मन में भरा गुबार जो, कुंठा की सौगात।।

चाहे दिन या रात हो, नहीं रहा अब चैन।
थोड़ी चाहत और की, लाचारी में नैन।।

समाधान की आस में, बिखर रहा विश्वास।
अब तो ऐसा लग रहा, आज खा रहे घास।।

पिता नहीं तो क्या हुआ, हम उनकी पहचान।
इसी बात का कर रहे, नित नूतन अभिमान।।

दिन की तो हम क्या कहें, नहीं बीतती रात।
मन में भरा गुबार जो, कुंठा की सौगात।।

चाहे दिन या रात हो, नहीं रहा अब चैन।
थोड़ी चाहत और की, लाचारी में नैन।।

सुधीर श्रीवास्तव, गोण्डा उत्तर प्रदेश

आँखें मौत के बाद अपनों की बेवफ़ाई देखती है

आँखें मौत के बाद अपनों की बेवफ़ाई देखती है
कहते हैं, मरने के बाद भी कुछ देर तक आँखों में हलचल रह सकती है,
पर कौन जाने, उन आँखों ने आख़िरी बार क्या देखा होगाज

जब वही आँखें अपनों को रोते हुए देखती होंगी,
अपने ही घर में खुद को बेगाना होते देखती होंगी,
रिश्तों को टूटते और अपनों को बदलते देखती होंगी,
तो शायद ख़ामोशी से यही कहती होंगी–

*÷ज़िंदगी से तो मौत ही बेहतर थी,
कम-से-कम वहाँ सुकून तो होगाज
न कोई दर्द होगा, न कोई शिकायत,
न अपनों से कोई उम्मीद होगीज÷।

जिन आँखों ने सारी उम्र अपनों के लिए सपने सजाए,
अगर उन्हीं आँखों को अपनों के बदलते चेहरे देखने पड़ें,
तो मौत का अँधेरा भी शायद सुकून-सा लगे।

कभी-कभी मौत से डर नहीं लगता,
डर तो उस ज़िंदगी से लगता है,
जहाँ इंसान साँसें तो लेता है,
मगर हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा मरता है!

ऊषा शुक्ला,
इफ़को आँवला
बरेली यूपी

हमारे गुरुवर

जीवन में ज्ञान का प्रकाश देते हैं,
सत्य राह के लिए प्रेरित करते हैं।
गलतियाँ होने पर कभी प्यार से,
तो कभी डाँट के वह समझाते हैं।

कठिनाइयों से पीछे न हटकर,
सदा आगे बढ़ना हमें सिखाते हैं।
और असफलता से न घबराकर,
सफलता के मार्ग पर चलते हैं।

गुरु केवल हमें विषय नहीं पढ़ाया,
कटु अनुभवों को भी बतलाया है।
इसलिए गुरुओं का स्थान हमेशा
ईश्वर से सर्वोपरी ऊपर बताया है।
एक आदर्श समाज के निर्माण में
अपनी सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं।
उनके अनुभव हमें जीवन की हर
परिस्थिति से लड़ना हमें सिखाते हैं।

योगिता साहू कक्षा 12 वीं, सरस्वती शिशु मंदिर शिवरीनारायण(छ ग)

झारखंड की पी टी उषा

उसका नाम ही था कविता महतो !
अपने जीवन का ही कविता बना डाली
संघर्ष में ही जीत है, एक मिशाल बना डाली
दो बच्चों की माता, दो फूल एक माली जैसा
उजड़ गयी मांग, कुचल गयी प्यार की फूलवारी
जवानी में विधाता ने विधवा उसे बना डाला था
अब ना कोई उसका घर वाला था
ना थी अब वो किसी की घरवाली
बुढे सास ससुर और दो मासूमों की
देख रही थी हर दिन उनकी बदहाली
कहते हैं सभी, अभावों की
चक्रव्यूह ने उसे घेर डाला था तभी
होने जा रही थी राज्य में होमगार्ड की बहाली
पर हाथ थे उसकी खाली- खाली
पैरों के ना जूते नसीब था
ना बदन को मिला ड्रेस ट्रेक शूट वाली
साड़ी कमर में लपेट नंगे पांव दौड़ डाली थी
कविता ने अपने जीवन का कविता लिख डाली
हिम्मत ने दी थी उसे हौसलों की उड़ान
लोगों ने बजाई थी जोरदार ताली
सोलह सौ मीटर को उसने
साढ़े छह मिनट में ही नाप डाली थी
कविता ने अपने जीवन का कविता लिख डाली थी
!!

श्यामल बिहारी महतो बोकारो, झारखंड फोन नंबर 6204131994

रावण-दहन : एक पुतला, लाखों चेहरे

दशहरा फिर आने को है, फिर सजेगा मैदान,
एक रावण को जलाने जुटेंगे लाखों महान।
हाथों में मशालें होंगी, अधरों पर जयकार,
भीतर बैठा दशानन हँसेगा, देख मनुज व्यवहार।

जिसके मन में लोभ पल रहा, वह लोभ-दहन को आएगा,
झूठ की नींवों पर बैठा, सत्य-सत्य चिल्लाएगा।
परधन हड़प, परपीड़ा बाँट, जो बना हुआ अवतार,
वह भी रावण फूँक कहेगा–जीत गया सदाचार!
रावण के दस शीश कटे थे, दस विकार के नाम,
आज हरेक के दस-दस चेहरे, मुख पर नीति, हृदय में दाम।
कथनी में मर्यादा बैठी, करनी में वनवास,
राम नाम की ओट में पलता स्वार्थ करे उपहास।
किसी की लंका कुर्सी पर है, किसी की तिजोरी में,
किसी का रावण छिपा हुआ है धर्म-कर्म की बोरी में।
किसी की तलवार कलम है, किसी का भाषण बाण,
किसी के मीठे वचनों में विष का गुप्त विधान।
पुतला जलेगा, धुआँ उठेगा, गूँजेगा जयगान,
कैमरों में कैद हो जाएगी धर्म-विजय की शान।
कल फिर वही छलावे होंगे, वही स्वार्थ का राज,
राख हुई प्रतिमा पर भारी जीवित रावण का ताज।
कैसा अद्भुत न्याय हमारा, कैसी नीति महान–
अपराधी मन बचकर निकले, पुतला पाए दंड-विधान!
दोष स्वयं के हों तो उनको कहते हैं मजबूरी,
दोष पराए हों तो उनकी नैतिकता है अधूरी।
लोभ अगर अपना हो जाए, वह आवश्यकता कहलाता,
पराया लोभ दिखे तो मन में धर्म उमड़कर आता।
अपना झूठ विवशता ठहरे, पर का झूठ विकार,
अपने हित में नीति झुके तो कैसा शिष्टाचार!
सोने की लंका ढह गई थी, पर लंका कहाँ मिटी?
रावण मरा, मगर रावणता मन की जड़ों में जमी।
अहंकार के राजमहल में विवेक हुआ निर्वास,
ज्ञान खड़ा है द्वार-द्वार पर, भीतर बंद प्रकाश।
राम यहाँ केवल नाम नहीं, मर्यादा का मान,
रावण केवल देह नहीं, विवेकहीन अभिमान।
राम अगर आचरण से रूठें, पूजा किस काम की?
मन में द्वेष, अधर पर भक्ति–क्या कीमत उस नाम की?
आखिर कब तक पुतला जलाकर खुद को श्रेष्ठ बताएँ?
कब तक अपने अंधकार पर दूसरों को समझाएँ?
कब तक बाहर अग्नि जलाकर भीतर रात बचाएँ?
कब तक अपने दोष छिपाकर धर्मध्वजा फहराएँ?
इस बार दशहरे पर इतना छोटा-सा काम करें
दूसरों के दोष गिनाने से पहले आत्म-परीक्षण करें।
लोभ, कपट, मद, द्वेष जहाँ हों, उनकी जड़ पहचानें,
अपने भीतर बैठे रावण को पहले स्वयं जानें।
जिस दिन पद से बड़ा चरित्र हो, लाभ से बड़ा विवेक,
जिस दिन सत्य न बिकने पाए, न्याय न हो सापेक्ष,
जिस दिन परहित स्वार्थ से ऊपर, करुणा बने विधान, उस दिन रावण-दहन नहीं–जीतेगा सच्चा इंसान।
दशहरा फिर आने को है, फिर सजेगा मैदान,
एक रावण को जलाने जुटेंगे लाखों महान।
पर इतिहास यही पूछेगा, उत्सव के अवसान
एक रावण तो जल गया, कब
जलेगा रावणत्व इंसान?

- डॉ. रामानुज पाठक, सतना

ई मोबाइल

ई मोबाइल ना जाने इहाँ का-का करवाई,
निमन रिश्ता के भी ई रिकाडिंग से तोड़वाई।
एक हजार ऐप एक हजार प्रलोभन ,
झूठ फरेब, भोजन जइसन, होत बा सेवन।
काजल से काला आज भइल बा शील,
फिल्टर लगाके चेहरा पर बनावेलें रील।
रिल बनावे में, रिल देखें में सब बाड़े वयस्त,
संसारिकता के वास्तविक सूर्य होइल जाता अस्त।
आज इहॉ सबे वायरल होइल चाहे,
एकरा खातिर का-का जुग्गत लगावे।
पइसा पावेला रिश्ता भईल बा तार-तार,
भाई बहिन बुआ मौसी सब भइली बेकार।
इज्जत वाली संस्कृति ना बाचल, ना बाचल रीति,
दिखावा के आगे चरित्र ढ़ह गईल जइसे बालू के भीति।
सात्विकता आज केकरो मन ना भावे,
झूठा दिखावा के आगे मस्तक झुकावे।

भीड़ में भी लोग आज बारे अकेला,
एक दूजे के लोग गढ़ा में धकेला।
आज हर समय मोबाइल पर रहस झुकल,
आभासी दुनिया में सब लोग ढुकल।

लोग पास रहके भी दूर भइल जाता ,
मोबाइलवा के स्क्रीन में सबे समाता।
ई मोबाइल ना जाने इहाँ का-का करवाई,
निमन रिश्ता के भी ई रिकार्डिंग से तोड़वाई।

नरेन्द्र कुमार बचरी (तापा), अखगॉव, संदेश, भोजपुर (आरा) बिहार - 802352

नवदुर्गा स्वरूप

पधारी मोरे अँगना जग जननी माई ।
प्रथम दिवस शैलपुत्रि मैया आई ,
द्वितीय दिवस ब्रह्मचारिणि मैया आई ।
पधारी मोरे अँगना..........
तिसरे दिवस चन्द्रघंटा मैया आई ,
चौथे दिवस कुष्मांडा मैया आई ।
पधारी मोरे अँगना..........
पंचम दिवस स्कन्दमाता आई ,
छठवें दिवस कात्यायनि मैया आई ।
पधारी मोरे अँगना..........
सप्तम दिवस कालरात्रि मैया आई ,
आठवें दिवस महागौरि मैया आई ।
पधारी मोरे अँगना..........
नवम दिवस सिद्धिदात्रि मैया आई ,
नवदुर्गा से मोरे अँगन
सुहाई ।
पधारी मोरे अँगना....

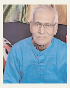

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
आरा, भोजपुर, बिहार

खुद को खोकर क्या पाया

खुद को खोकर क्या पाया
अपनो से धोखा पाया,
और पाया विश्वासघात,
जिन्हें अपना समझता
उन्होंने ही दिए आघात,
परायो ने भी तो देखो लगाया
जख्म पर नमक कई बार,
किसी को अपना इस जहां में,
मेरे न आज तक पाया,
सबके लिए अच्छा सोचने ,करने पर भी,
आज खुद को गुनहगार पाया,
खुद को खोया अपनो
के लिए
कितनी सहन की
पीड़ाए पर,
मिला नही कभी किसी
से भी साधुवाद,
खुद को खोकर पाया मेने अपनो से आघात,

दुष्यंतराजसिंह गहलोत जालोर मारवाड़

जय माँ दुर्गे

हाथी पर सवार हो मैया,
अब धरती पर आई हैं।
माता ने अपने भक्तों पर,
खुशियाँ अति बरसाई हैं।।
दस दिन तक पंडाल सजेंगे,
पूजन होगा माता का।

कन्याएं पूजी जायेंगी,
सुंदर रूप विधाता का।।
घोड़े पर होंगी सवार माँ,
फिर वे वापस जाएंगी।

आएंगी नवरात्र चैत की,
फिर से वापस आएंगी।।
भक्तों की रक्षा करने को,
माता आती
जाती हैं।
कोई कष्ट न
होने देती,
बेड़ा पार
लगाती हैं।।

सुरेशचन्द्र जोशी, उत्तराखंड, पिथौरागढ़।

नवरात्र - रामलीला

नवरात्र देवी पूजन, दशहरा का आयोजन।
हर साल चल रहा है,श्री रामलीला मंचन।

गॉव नगर शहर में, सज रहे मोहल्ले सारे,
पंडालों में है पूजा, संग गरबा नृत्य प्यारे
पूजन करा रहे हैं,जगराते हो रहे हैं,
नवरात्र व्रत करते,नव उर्जा संजो रहे हैं,
श्रद्धालु कर रहे सब,शक्ति का आराधन।
नवरात्र.ज्ज......

सब देवी मंदिरों में, भक्तों की भीड़ भारी,
चौबीसों घण्टे रौनक,दर्शन का क्रम है जारी,
जय माता दी,जयकारे, वातावरण में गुंजित,
श्री राम की लीलाएं, परदे पर हैं प्रदर्शित,
भक्ति भाव गंगा में,नित्य है अवगाहन।
नवरात्र....

श्रीराम ने भी की थी नवरात्र शक्ति पूजा,
भारतीय संस्कृति में नहीं राम सा कोई दूजा,
हर प्राणी को लुभाती हैं, श्रीराम की लीलाएं,
जीवन कला के कितने ही पाठ यह पढ़ाएं,
इससे हुआ प्रभावित, हर देशवासी का मन।
नवरात्र..........

डॉ.अनिल शर्मा अनिल

घर की दीवारों पर

घर की दीवारों पर कितनी भी दरारें आ जाएँ,
एक कोना हमेशा ऐसा था,
जहाँ से पूरा घर अब भी सीधा दिखाई देता था।

एक ही दरवाज़े से सीधी रोशनी हर कोने में आती थी।

आज भी सफ़ाई करते समय कुछ अधूरा लगा।

लगा कि फ़र्श पर कुछ दाग आज भी हैं,
कुछ अलमारियों के खिसकने के निशान
ज़मीन पर आज भी हैं।

कुछ सामान अपनी जगह पर लौट आए थे,
मगर उन्हें सही जगह पर रखने वाला तरीका
अब भी कहीं ढूँढ़ना पड़ता था।

बैठने वाले सोफ़े से गलीचे की दूरी कितनी होगी,
हर बार बदल जाती थी।

वो सीधा तकिया भी कोनों से मुड़ जाता था,
जैसे सब नाटक चल रहा हो।

सब अपना अभिनय किसी की तरह
करने की कोशिश कर रहे हों।

कौन है वो, जिसको खुश रखने की बात आती है?

उसके ज़माने की बातें भी फिर निकल आती हैं।

अब तो पर्दों और खिड़कियों ने भी हिस्सा लिया है,
दो-दो शब्द बोलकर वो भी निकल गए।

तस्वीरों में भी एक अलग कहानी दिखती है,
लोगों के कहने से पहले ही कुछ तस्वीरें बदलती हैं।

यादों में आज भी एक स्थान खाली रखा जाता है,
जैसे कोई आकर उन यादों का किराया माँगेगा।

आज भी सुबह उठकर, किसी एक को प्रणाम किया जाता है।
जैसे वो पलटकर जवाब देगा, राम राम जी।
और पलटकर पूछेगा, हो गई सुबह तुम्हारी?

अनुपमा आर्य - आगरा

सलामत रहे तेरी खुशियां ओ बहिना

सलामत रहे तेरी खुशियां ओ बहिना, इनको नजर ना किसी की लगे।
करता हूँ यही दुहा मैं रब से, मेरी उम्र भी तुमको लग जाये।।
सलामत रहे तेरी खुशियां ---------------------------।।
मैं चाहे दूर हूँ आज तुमसे, लेकिन तुम्हें मैं भूला नहीं।
अपना है रिश्ता उम्रभर का, और तेरा प्यार भूला नहीं।।
कभी नहीं हो कम प्यार अपना, रोशन सदा तू मुझको लगे।
करता हूँ यही दुहा मैं रब से, मेरी उम्र भी तुमको लग जाये।।
सलामत रहे तेरी खुशियां ---------------------------।।
कोई मुसीबत जब आये तुम पर, मुझको बताना नहीं भूलना।
दौड़ा हुआ चला आऊँगा मैं, दुःख तेरा मुझको नहीं देखना।।
चाहता हूँ तू सदा खुशहाल रहे, आबाद सदा तू मुझको लगे।
करता हूँ यही दुहा मैं रब से, मेरी उम्र भी तुमको लग जाये।।
सलामत रहे तेरी खुशियां --------------------------।।
कितना है प्यार मुझको तुमसे, तू है बहिना मुझको जां से प्यारी।
फूलों से भर दूँ मैं तेरी राह को, तू है बहिना मेरी खुशियां सारी।।
महका हो तेरा आँगन सदा, हंसती सदा तू मुझको लगे।
करता हूँ यही दुहा मैं रब से, मेरी उम्र भी तुमको लग जाये।।
सलामत रहे तेरी खुशियां --------------------------।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद, तहसील एवं जिला- बारां(राजस्थान)

दुनिया में अशांति का घेरा

आज सारी दुनिया में अशांति का ही घेरा है।
खून भरी रातें हैं, सिसकता सबेरा है।
क्या सुनायें आज हम तुम्हे,हाले दिल गरीबों का,
अमीरों की मुट्ठी में कैद हुआ डेरा है।।
कुर्सियों की दौड़ में यहां ,बिक गए सभी ईमान,
गीदड़ों महफ़िल में नाच रहा शेरा है।।
नशे में डूब गया बचपन,चल रही खूब दुकान,
मोबाइल का हरेक घर में आजकल बसेरा है।।
घर बन गया अब यहां फ्लैट , वृद्धाश्रम में
रहते मां बाप,औलादों से रिश्ता तेरा है न मेरा है।
गा सको तो आज गाओ तुम ,विवेकानंद के संदेशों को,
आज इस दुनिया में शांति का लुटेरा है।।

डॉ प्रणय श्रीवास्तव
अश्क वारासिवनी